# मेरा पर्यावरण

डॉ विजय कुमार द्विवेदी
वैज्ञानिक ई-1 एवं प्रभारी अधिकारी राजभाषा
राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान , रूड़की

मेरा पर्यावरण बोझ नहीं है
हमने यह पहचान लिया है।
धरती, अंबर, नदियाँ, झीलें,
सब अपने हैं जान लिया है ।

दिन चढ़ते ही धूप का चिलचिलाना,
अपराह्न तक अंबर में काले-काले मेघों का मंडराना,
शाम होते - होते क्षितिज पर इन्द्रधनुष का रंग बिखरना,
आधी रात में धरती पर धम-धम बारिश होना,
दरियाओं का बहते जाना,
झीलों में पानी का उफनना,
सागर में लहरों का उठना,
इनका आपस में है रिश्ता,
हमने यह पहचान लिया है।

मेरा पर्यावरण बोझ नहीं है
हमने यह पहचान लिया है ।
घास, फूस, पेड़ और जंगल
सब अपने हैं, जान लिया है।

सूखी धरा का तर हो जाना,
चारों तरफ सोंधी-सोंधी महक बिखेरना,
मिट्टी में अंकुर का फूटना,
अंकूर से घास निकलना,
घास से फूस का बनना,
इन फूसों का पेड़ों को बचाना,
पेड़ों से जंगल का बन जाना,
इनका आपस में रिश्ता है,
हमने यह पहचान लिया है।

मेरा पर्यावरण बोझ नहीं है
हमने यह पहचान लिया है।
अन्न, अग्नि, जल और जीवन
सब अपने हैं, जान लिया है ।

पहले-पहले इंसानों का आग जलाना,
खेती करना, अन्न उगाना, पेड़ लगाना,
अपने उदर की ज्वाला को बुझाना,
इन सभी के लिए जल का पाना,
जिसके लिए दरिया को दोहना,
झील बनाना, सागर को मथना,
इनका आपस में रिश्ता है ,
हमने यह पहचान लिया है ।

मेरा पर्यावरण बोझ नहीं है
हमने ये पहचान लिया है ।
संरक्षण , संवर्धन और प्रबन्ध
सब अपने हैं , जान लिया है ।

खेती करना , पेड़ लगाना ,
पहिए का आकार बनाना ,
भाप की ताकत या बिजली पर काबू पाना,
एटम का टुकड़ो में बाँटना,
खेल-खेल में चाँद की छईयाँ छूकर आना,
प्रगति के पथ पर बढ़ते जाना
कल-कारखानों का निर्माण होना
काले-पीले-नीले धूएं का निकलना
पेड़ पौधे का मुरझाना
दरिया, झील, नलों का सूखना
संतुलित पर्यावरण का बिगड़ना
इनका आपस में रिश्ता है ,
हमने यह पहचान लिया है ।

मेरा पर्यावरण बोझ नहीं है
हमने यह पहचान लिया है ।

*******